**परिचय**

वैदिककाल से हीभारतीय समाजमेंषिक्षा कोमहत्वपूर्णतथागुरू कोउच्चस्थानदियागयाहै।वैदिककालमेंषिक्षकको ''गुरू'' कहाजाताथा, जिसकासामान्यअर्थभारीहोताहै, अर्थातगुरू वहथाजोज्ञानप्रदानकरने के भारीउत्तरदायित्व का वहनकरताथा।

वैदिककालमेंशिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्राप्तिथा, अर्थातआवश्यकता एवंइच्छाएँ सीमितथी, इसलिए गुरू के लिए विशेषअथवासामान्य प्रशिक्षण की कल्पनाही नही की गईथी।वह स्वंय अध्यवसायी, परिश्रमी, ज्ञानवान, विवेकवान एवंभविष्य दृष्टाथा।औरइसकेलिए प्रयास–रतथा, अतः बिनाकिसीऔपचारिकताप्रशिक्षण के भीगुरू की प्रासंगकिताबनीरहतीथी।

आधुनिक अध्यापक षिक्षा के प्रादुर्भाव का श्रेय ब्रिटिष शासनकोजाताहै।सन् 1716 मेंजबडेनमार्क की मषीनरियों ने ट्रान्क्युबर ने षिक्षकप्रषिक्षण के लिए नार्मनस्कूल की स्थापना की तभी से अध्यापक प्रषिक्षण का औचित्य प्रारम्भहोताहै।डॉ. एण्ड्रयुबेल ने सन् 1787 मेंप्राथमिकस्तरपर अध्यापकोंकोनिर्देषितकरने की योजनामद्रासप्रान्त के लिए बनाई। इस प्रकारषिक्षा के तीनस्तरहोगये–प्राथमिकस्तर, माध्यमिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर, जिनकाउद्देष्य विषेषस्तर के लिए विषेष दक्षताप्राप्तकरषिक्षकतैयारकरनाथा।

षिक्षा की गुणवत्ताको बढाने के लिए अध्यापकोंको अध्यापनकार्यतथापाठ्यसहगामीक्रियाकलापोंमें दक्ष होनाचाहिए तथाअपनेव्यवसाय के प्रतिप्रतिबद्ध होनाचाहिए और अध्यापकोंमेंव्यावसायिकप्रतिबद्धतालाने के लिए सेवापूर्णतथासेवाकालीन अध्यापक षिक्षा की भूमिकामहत्वपूर्णहैंइसकेलिए राष्ट्रीय अध्यापक परिषद ने एक दस्तावेज ''दक्षताआधारितऔरप्रतिबद्धताउन्मुख गुणवत्तामूलकविद्यालय षिक्षा हेतु अध्यापक षिक्षा'' जारीकिया।सन् 2000 मेंप्राथमिकषिक्षा के सार्वभौमिकरण का मुद्दाउठा, जिसकाउद्देष्य पूर्णप्राथमिकतथाप्राथमिकषिक्षा कोगुणवत्ताप्रदानकरनाथा। 12 दिसम्बर 2002 कोसंविधान के छियासिवेंसंषोधन के द्वाराप्रारम्भिकषिक्षा कोमूलअधिकारोंमेंसम्मिलितकियागयातथाकहागया ''राज्य 6–14 वर्षतक की आयुवालेसभीबालकों के लिए निःषुल्कऔरअनिवार्यषिक्षा देने का ऐसीरीतिमेंजोराज्य विधि द्वाराअवधारितकरेंउपबन्ध करेगा'' दसवीपंचवर्षीय योजना 2002–2007 मेंप्राथमिकषिक्षा सम्बन्धीनिम्नलिखित लक्ष्य निर्धारितकियेगये।3–6 आयुवर्ग के सभीबच्चो की देखभालतथाषिक्षा के लिए केन्द्रउपलब्ध हो।6–14 आयुवर्ग के सभीबच्चोंकोअपने घर से 1

किलोमीटर के अन्दरप्राथमिकविद्यालय उपलब्ध हो।हरदोप्राथमिकविद्यालयोंपर एक उच्चप्राथमिकविद्यालय होनाचाहिये।वर्ष 2003 तकसभीबच्चों का नामांकन या तोविद्यालय मेंहोजाये या उनके लिए वैकल्पिकव्यवस्थाहोजाए।सन् 2007 तकसभीबच्चे 5 वर्ष की प्राथमिकषिक्षा पूरीकरलें।प्राथमिकस्तरपरवर्ष 2007 तकसभीबच्चेविद्यालय मेंबनेरहे।उच्चप्राथमिकस्तरपरअपव्यय कोहटाकर 10प्रतिषित से भी कम करदियाजाये।प्राथमिकषिक्षा मेंनामांकन, शैक्षिकउपलब्धियोंआदि की दृष्टि से लड़केऔरलड़कियों के सामाजिकभेदभाववर्ष 2007 तकसमाप्तकरदियेजायें।

नईषिक्षा नीति 2020 मेंपाँचवी कक्षा तकमातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषामेंपढाई का माध्यम रखने की बातकहीगईहैतथा यह भीकहागयाहैंकिकिसीभीभाषाकोथोपा नही जायेगा।षिक्षकों के लिए राष्ट्रीय अध्यापक प्रोफेषनलमानक (एन.पी.एस.टी) राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद् द्वारावर्ष 2022 तकविकसितकियाजायेगा, जिसकेलिए एन.पी.ई.आर.टी. षिक्षकोंतथासभीस्तरों एवं क्षेत्रों के विषेषज्ञसंगठनों के साथपरामर्षकियाजायेगा।

जहाँ प्राथमिकऔरपूर्व माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बढ़ी वहींप्राथमिकषिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य कोपाने के लिए अर्थात् गुणवत्ता–युक्तप्राथमिकषिक्षा प्रदानकरने के लिए प्राथमिकविद्यालयोंमेंअन्य मूलभूतसुविधाओं के साथ–साथषिक्षकों की संख्या भी बढी, जिसकीपूर्ति के लिए पैराषिक्षकों की नियुक्ति की गई, किन्तुप्रारम्भिकषिक्षा कोगुणवत्तायुक्तबनाने के लिए यह आवष्यक था।तेजी से बदलतेसामाजिक, आर्थिक एवंसांस्कृतिकपरिदृष्य मेंषिक्षक का यह दायित्वबनताहैकिवहषिक्षा को एक प्रसन्नतादायकअनुभवबनाए।षिक्षा के उद्देष्योंकोप्राप्तकरने के लिए षिक्षकको स्वंय में एक अन्वेक्षकहोनाचाहिए।ज्ञान के सम्प्रेषण के लिए सहनषीलहोनाचाहिए, अर्थातउसेअपनेव्यवसाय के प्रतिपूर्णतयाप्रतिबद्ध होनाचाहिए।षिक्षक की व्यावसायिकप्रतिबद्धताकोकई रूपोंमेंव्यक्तकियाजासकताहै।

राष्ट्रीय अध्यापकपरिषद् ने अध्यापक के लिए व्यावसायिकप्रतिबद्धता के 5 प्रमुख क्षेत्र बताए है।अधिगमकत्ताओं के प्रतिप्रतिबद्धता, समाज के प्रतिप्रतिबद्धता, आजीविका के प्रतिप्रतिबद्धता, आजीविकागतक्रियाकलापमेंउत्कृष्टता की प्राप्तिसम्बन्धीप्रतिबद्धता, मूलभूतमूल्यों के प्रतिप्रतिबद्धता।

## साहित्य का पुनरावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन में शोध विषय ''सरकारी एवंगैर–सरकारीसेवारतउच्चप्राथमिकविद्यालय षिक्षकों की विद्यार्थियों एवंविद्यालय के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता'' परकियेजानेवाले शोध विषय से सम्बन्धितपूर्व मे उपलब्ध निम्नलिखितसाहित्य का अध्ययन कियागयाहै, जिससे की शोध विषय का गहनता से व्यवहारिक अध्ययन कियाजासके।

## पुस्तके


* चौपड़ा, आर.एल., (2008) : अध्यापक शिक्षा, स्वातिपब्लिकेशन, जयपुर
* चौधरी, प्यारेलाल, (2008) : शिक्षा मेंसांख्यिकी, स्वातिपब्लिकेशन, जयपुर
* सरीन एवंसरीन, (2008) : शैक्षिकअनुसंधान की विधियाँ, विनोदप्रकाशनपुस्तकमन्दिर
* शर्मा, आर.ए., : शिक्षा अनुसंधान, सूर्यापब्लिकेशन, मेरठ।
* सिंह, रामपाल, : शैक्षिकअनुसंधान एवंसांख्यिकी।
* शर्मा, आर.ए., : षिक्षा तथामनोविज्ञानमेंप्रारम्भिकसांख्यिकी, सूर्यापब्लिकेषनमेरठ।
* श्रीवास्तव, डी.एन, वर्मा, प्रीति, : मनोविज्ञानऔरषिक्षा मेंसांख्यिकी, विनोदपुस्तकमन्दिर, आगरा।
* शर्मा, वीरेन्द्रप्रकाष, : रिसर्चमेथडॉलाजी, पंचषीलप्रकाषन, जयपुर।
* मंगल, डॉअंषु, : शैक्षिकअनुसंधान की विधियाँ समंक–विष्लेषण एवं शैक्षिकसांख्यिकी, राधा प्रकाषनमन्दिर, आगरा।
* ढोडियाल ,सच्चिदानन्द, एवंफाटकअरविन्द, : शैक्षिकअनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थानहिन्दीग्रंन्थअकादमी, जयपुर।
* कपिल, एच.के., (2010), : अनुसंधानविधियाँ, एच.पी.भार्गवबुकहाऊस, आगरा।


## पत्र/पत्रिकाएँ


* नयाषिक्षक–राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका जुलाई–दिसम्बर, 2006.
* प्दकपंद रवनतदंस वि्ेलबीवउमजतल ंदक म्कनबंजपवदए टवस.28 छवृ 2
* श्रवनतदंस वि ेंसस प्दकपंद ेवबपंजपवद वित म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी 18 ;1–2द्ध
* म्कनजतंबोए डवदजीसल रवनतदंस 6 ;5द्ध
* डम्त्ए श्रवनतदंस वि म्कनबंजपवद 5 ;1द्ध
* षिक्षकषिक्षा शोध पत्रिका, टवस.10 ;3द्ध श्रनस दृ ैमचज 2016ण

**वेबसाइट**

* ैवकीहंदहं
* ैवकीहंदहवजतप

* **बेला (2013)** ने कोट्टायममेंउच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की प्रभावशीलतातथाव्यावसायिक योग्यता की जाँच की तथानिष्कर्षनिकालाकि माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की प्रभावशीलतातथाव्यावसायिक योग्यता के मध्य कोईमहत्वपूर्णसम्बन्ध नही है।
* **चतुर्वेदीमिनाक्षी (2021)** ने संगठनात्मकजलवायुभूमिकासंघर्षतथालिंग के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिकप्रतिबद्धता का अध्ययन कियातथानिष्कर्षस्वरूपपायागयाकिअनुकूलसंगठनात्मकवातावरणमेंकार्यकरनेवाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक, प्रतिकूलसंगठनात्मकवातावरणमेंकार्यकरनेवालेशिक्षकों की तुलनामेंछात्रों के प्रतिपेशे के प्रति, समाज के प्रति, संस्था के प्रति, नैतिकता के प्रतिअधिकप्रतिबद्धता रखतेहै।
* **गोयल (2013)** ने शिक्षकों की नौकरी की सन्तुष्टि, व्यक्तित्व की प्रभावशीलतापर एक अध्ययन कियातथापायाकिपुरूष शिक्षकों की तुलनामेंमहिलाशिक्षकों की शिक्षकप्रभावशीलताकाफीअधिकथीऔरग्रामीणस्कूलशिक्षकों की तुलनामें शहरीस्कूलशिक्षकों की शिक्षकप्रभावशीलताकाफीअधिकथी।
* **कुमार (2005)** ने प्रारम्भिकषिक्षा के भावीषिक्षकों की षिक्षकअभिवृत्तियाँ तथाषिक्षणव्यवसाय के प्रतिवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तर का एक अध्ययन किया।प्रारम्भिकषिक्षा के पुरूष एवंमहिलावर्ग के भावीषिक्षकों की षिक्षणव्यवसाय के प्रतिवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तरमेंसार्थकअन्तर नही है।महिलावर्ग के भावीषिक्षकों की षिक्षण की षिक्षणव्यवसाय के प्रतिवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तरपुरूष वर्ग से अधिकसकारात्मकहै।प्रारम्भिकषिक्षा के शहरी एवंग्रामीण क्षेत्र के भावीषिक्षकों की षिक्षणव्यवसाय के प्रतिवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तरमेंसमानतापायीगयी।सामान्य जाति एवंअनुसूचितजाति के षिक्षकों की षिक्षणव्यवसाय मेंवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तरमेंकोईसार्थकअन्तर नही है।भावीषिक्षकों की षिक्षणअभिवृत्तियाँ तथाषिक्षणव्यवसाय के प्रतिवचनबद्धता एवंसमर्पणस्तर के मध्य सहसम्बन्ध नही है।

* **माहेष्वरी (2004)** ने माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकों की व्यावसायिकप्रतिबद्धता का अध्ययन कियाजिसकेनिम्नलिखितनिष्कर्षनिकाले।माध्यमिक विद्यालय के षिक्षकऔसतस्तर की व्यावसायिकप्रतिबद्धता के प्रदर्षन की प्रवृत्ति रखतेहै।महिलाषिक्षकअपनेसाथीपुरूष षिक्षकों से अधिकप्रतिबद्धताप्रदर्षितकरतीहै।विद्यालय षिक्षकों के मध्य व्यावसायिकप्रतिबद्धतामेंभिन्नताउनकीसामाजिकऔर शैक्षिकविषेषताओं से सम्बन्धितहोतीहै।आयुशैक्षिकउपलब्धि,सामाजिक–आर्थिकस्थितिजातितथासामुदायिकपृष्ठभूमितथा षिक्षणअनुभवआदिषिक्षकों की व्यावसायिकप्रतिबद्धताकोप्रभावितनहींकरतेहै।

* **मिश्रा (2011)** ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीचशिक्षकप्रभावशीलतानौकरी की सन्तुष्टिऔरसंस्थागतप्रतिबद्धताको अध्ययन कियातथानिष्कर्षनिकालाकि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षकप्रभावशीलता, नौकरी की सन्तुष्टिऔरसंस्थागतप्रतिबद्धतासकारात्मकपाईगईतथा एक–दूसरे के साथमहत्वपूर्णसहसम्बध पायागया।नौकरी से सन्तुष्टशिक्षकनौकरी से कम सन्तुष्टशिक्षकों की तुलनामेंअपनेसंस्थान के प्रतिअधिकप्रतिबद्ध पायेगये। यह भी पता चलाकिपुरूष शिक्षकमहिला, शिक्षकों की तुलना मे अधिकप्रतिबद्ध है।लिंगतथाविद्यालय प्रकार के आधारपरकोईमहत्वपूर्णअन्तर नही है।

* **वर्मा (2006)**भूमिकाप्रतिबद्धता के सम्बन्ध मेंशिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि का परीक्षणकियातथानिष्कर्षस्वरूपपायाकिपुरूष शिक्षकों की तुलनामेंमहिलाशिक्षिकाओंमेंनौकरी के प्रतिसन्तुष्टिपरप्रशिक्षण का तथाअनुभव का महत्वपूर्णप्रभाव देखा गया।वरिष्ठशिक्षककनिष्ठशिक्षकों की तुलनामेंअपनेकाम से अधिकसन्तुष्टपायेगये।नौकरी की सन्तुष्टिपरआवासीय पृष्ठभूमितथाभूमिकाप्रतिबद्धता के बीचअन्तःक्रिया का प्रभावअलगपायागया।

### शोध के उद्देश्य :

प्रत्येक शोध कार्यकोकरनेलिए उसकेउद्देष्य निष्चितकियेजातेहै, जिससे शोधकार्यसहीदिषामेंअग्रसरहो।प्रस्तुत अध्ययन में ''सरकारी एवंगैर–सरकारीसेवारतउच्चप्राथमिकविद्यालय षिक्षकों की विद्यार्थियों एवंविद्यालय के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता'' विषय परकियेजानेवाला शोधकार्यनिम्नलिखितउद्देष्यों की पूर्ति से परिपूर्णहै–

1. विद्यालय के शिक्षकों की विद्यार्थियों के अध्ययन कार्यमें रूचि का अध्ययन करना।
2. विद्यालय के शिक्षकों की विद्यालय कार्यमेंव्यस्तताहैअथवा नही, इसका अध्ययन करना।

3. प्राथमिकविद्यालयोंमेंसेवारतशिक्षकों की समाज के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
4. प्राथमिकविद्यालयोंमेंसेवारतशिक्षकों की आजीविका के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
5. प्राथमिकविद्यालयोंमेंसेवारतशिक्षकविद्यालय के गैर–शैक्षणिक–कार्योमें रूचिलेते या नही, इसका अध्ययन करना।
6. प्राथमिकविद्यालयों मे सेवारतशिक्षकअपनेव्यावसायिककार्योको तय समय मेंपूर्णकरतेहै या नही, इसक अध्ययन करना।

**निदर्षनपद्धति एवंन्यादर्षचयन :**

प्रस्तुत अध्ययन मेंकियेजानेवाले शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र राजस्थानप्रान्त के जयपुरजिले के अन्तर्गत ''विद्याधरनगरविधानसभा'' क्षेत्र है। इस शोधकार्यमेंविद्याधरनगरविधानसभा शहरीतथाग्रामीण क्षेत्र के सरकारीतथानिजीविद्यालयो के विद्यार्थियोंतथा उनके अभिभावकोंकोन्यादर्श के रूपमें शामिलकियाजायेगा।इस विषय परकियाजानेवाला शोधकार्यसत्य, प्रमाणिक एवंविष्वसनीय बनें, इसकेलिए शोध विषय की जानकारी रखनेवालेऔर शोधकार्य के उद्देष्यों की पूर्ति से सम्बन्धितसूचनाएँ प्रदानकरनेवालेउत्तरदाताओं का निदर्षनपद्धति के माध्यम से चयनकियाजायेगा।मेरे शोध विषय की प्रकृति के आधारपरउद्देष्यपूर्णनिदर्षनपद्धति का उपयोगकरतेहुए उत्तरदाताओं का चयनकियाजायेगा।इन्हीन्यादर्षआधारितनिष्कर्षो के आधारपरसमष्टि के विषय मेंउद्देष्यों के अनुरूपसामान्यीकरणकियाजायेगा। इस उद्देष्यपूर्णनिदर्षनविधि का प्रयोगकरतेहुए 400विद्यार्थियोंतथा100अध्यापकों का चयनकरकेउनसेतथ्यात्मकसामग्री एकत्रित की जायेगी,जिसकाविवरण इस प्रकारहै–

# चयनितन्यादर्ष का विवरण

### 1. न्यादर्षविद्यार्थी

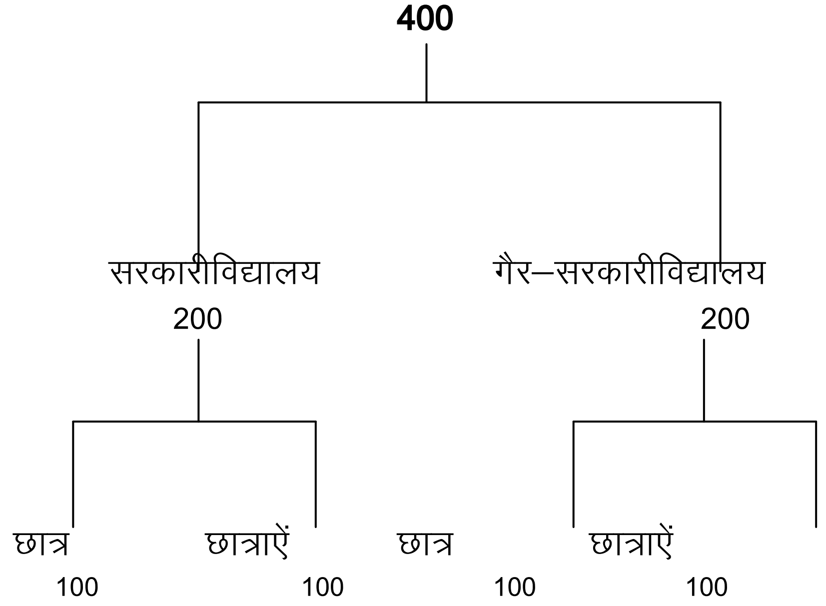


### 2. न्यादर्ष–अध्यापक

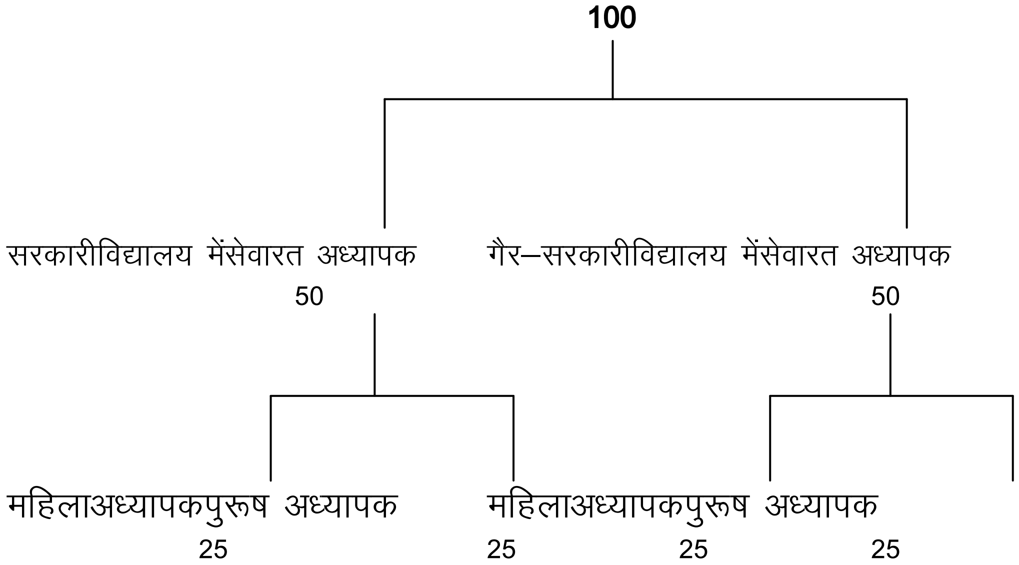

**शोधपरचना**

प्रस्तुत अध्ययन मे ‘‘सरकारी एवंगैरसरकारीसेवारतउच्चप्राथमिकविद्यालय षिक्षकों की विद्यार्थियोंतथाविद्यालय के प्रतिव्यवसायिकप्रतिबद्धता’’ विषय परकियेजानेवाला शोध विषय पूर्णव्यवस्थित बन सकें, इसकेलिए एक शोध प्रसंरचना का निर्माणकियागया।मेरे शोध विषय की प्रकृति के आधारपरमेरा शोधकार्यव्यवहारिकअनुसंधानपरआधारितहै, परन्तु शोध प्रकृति के आधारपरकुछतथ्य सूचनाएँ एवं शोध आँकड़ेउत्तरदात्ताओं से प्राप्तकरने के लिए अन्वेषणात्मक एवंविवरणात्मक शोध–पद्धतियों का भीप्रयोगकियाजायेगा।

उपरोक्त शोध पद्धतियोंका प्रयोगकरतेहुए अध्ययनरतविद्यार्थियोंतथाअभिभावकोंसे सूचनाएँ एवंजानकारियाँ प्राप्तकरने के लिए अवलोकन,साक्षात्कारऔरअनुसूचीजैसी शोध–प्रविधियों का उपयोगकियाजायेगा।अतः उच्चप्राथमिकविद्यालय मेंसेवारतषिक्षकों की कार्य के प्रतिप्रतिबद्धतामापने के लिए शोध उपकरण के रूपमें ‘‘साक्षात्कारअनुसूची’’ का प्रयोगकियाजायेगा।

**शोध के अध्यायीकरण :**

प्रस्तुत अध्ययन मे ‘‘सरकारीतथागैर–सरकारीसेवारतउच्चप्राथमिकविद्यालय षिक्षकों की विद्यार्थियोंतथाविद्यालय के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता’’ विषय परकियेजानेवाले शोध–प्रबन्ध कोनिम्न अध्यायोंमेंविभक्तकियाजायेंगा।

**प्रथम अध्याय :** शोध विषय का परिचय

**द्वितीय अध्याय :** साहित्य का पुनरावलोकन

**तृतीय अध्याय :** सरकारीएवंगैर–सरकारीविद्यालयोंकी अवधारणा, संगठन, संरचना एवंकार्य

**चतुर्थ अध्याय :** षिक्षकों की विद्यार्थियों एवंविद्यालयों के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता काविष्लेषणात्मक अध्ययन

**पंचम् अध्याय :** विद्यार्थियों का अध्यापकों के प्रतिव्यावसायिकप्रतिबद्धता दृष्टिकोण–विष्लेषणात्मक अध्ययन

**षष्टम् अध्याय :** सारांष, निष्कर्ष, सुझाव

# सन्दर्भग्रन्थसूची


## पुस्तके

* चौपड़ा, आर.एल., (2008) : अध्यापक शिक्षा, स्वातिपब्लिकेशन, जयपुर
* चौधरी, प्यारेलाल, (2008) : शिक्षा मेंसांख्यिकी, स्वातिपब्लिकेशन, जयपुर
* सरीन एवंसरीन, (2008) : शैक्षिकअनुसंधान की विधियाँ, विनोदप्रकाशनपुस्तकमन्दिर
* शर्मा, आर.ए., : शिक्षा अनुसंधान, सूर्यापब्लिकेशन, मेरठ।
* सिंह, रामपाल, : शैक्षिकअनुसंधान एवंसांख्यिकी।
* शर्मा, आर.ए., : षिक्षा तथामनोविज्ञानमेंप्रारम्भिकसांख्यिकी, सूर्यापब्लिकेषनमेरठ।
* श्रीवास्तव, डी.एन, वर्मा, प्रीति, : मनोविज्ञानऔरषिक्षा मेंसांख्यिकी, विनोदपुस्तकमन्दिर, आगरा।
* शर्मा, वीरेन्द्रप्रकाष, : रिसर्चमेथडॉलाजी, पंचषीलप्रकाषन, जयपुर।
* मंगल, डॉअंषु, : शैक्षिकअनुसंधान की विधियाँ समंक–विष्लेषण एवं शैक्षिकसांख्यिकी, राधा प्रकाषनमन्दिर, आगरा।
* ढोडियाल ,सच्चिदानन्द, एवंफाटकअरविन्द, : शैक्षिकअनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थानहिन्दीग्रंन्थअकादमी, जयपुर।
* कपिल, एच.के., (2010), : अनुसंधानविधियाँ, एच.पी.भार्गवबुकहाऊस, आगरा।

## पत्र/पत्रिकाएँ

* नयाषिक्षक–राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिका जुलाई–दिसम्बर, 2006.
* प्दकपंद रवनतदंस वि च्ेलबीवउमजतल ंदक म्कनबंजपवदए टवस.28 छव ृ 2
* श्रवनतदंस वि ंसस प्दकपंद ेवबपंजपवद वित म्कनबंजपवदंस त्मेमंतबी 18 ;1–2द्ध
* म्कनजतंबोए डवदजीसल रवनतदंस 6 ;5द्ध
* डम्त् श्रवनतदंस वि म्कनबंजपवद 5 ;1द्ध
* षिक्षकषिक्षा शोध पत्रिका, टवस.10 ;3द्ध श्रनस ृ ैमचज 2016ण

## वेबसाइट

* ैवकीहंदहं
* ैवकीहंदहवजतप